क्या होते हैं कुंडली के 12 भाव, कैसे करते हैं हमें प्रभावित...

विधि का विधान है कि मनुष्य जन्म पाकर मोक्ष तक पहुंचे अर्थात् प्रथम भाव से द्वादश भाव तक पहुंचे।

किसी भी मनुष्य के जीवनारंभ से लेकर मृत्यु तक जो भी सांसारिक अथवा जिन अन्य वस्तुओं आदि की आवश्यकता मनुष्य को पड़ती है उसका संबंध प्रथम (पहले) भाव से द्वादश (बारहवें) भाव से होता है।

मनुष्य के लिए संसार में सबसे पहली घटना उसका इस पृथ्वी पर जन्म है, इसीलिए प्रथम भाव जन्म भाव कहलाता है। जन्म लेने पर जो वस्तुएं मनुष्य को प्राप्त होती हैं उन सब वस्तुओं का विचार अथवा संबंध प्रथम भाव से होता है जैसे- रंग-रूप, कद, जाति, जन्म स्थान तथा जन्म समय की बातें।

मनुष्य को शरीर तो प्राप्त हो गया, किंतु शरीर को गतिमान बनाए रखने के लिए खाद्य पदार्थों, धन अथवा कुटुंब की आवश्यकता होती है। इसीलिए खाद्य पदार्थ, धन, कुटुंब आदि का संबंध द्वितीय भाव से है।

धन अथवा अन्य आवश्यकता की वस्तुएं बिना श्रम के प्राप्त नहीं हो सकतीं और बिना परिश्रम के धन टिक नहीं सकता। धन-धान्य इत्यादि वस्तुएं आदि रखने के लिए बल आदि की आवश्यकता होती है इसीलिए तृतीय भाव का संबंध, बल, परिश्रम व बाहु से होता है।

शरीर, परिश्रम, धन आदि तभी सार्थक होंगे जब कार्य करने की भावना होगी, रूचि होगी अन्यथा सब व्यर्थ है। अत: कामनाओं, भावनाओं को चतुर्थ भाव रखा गया है। चतुर्थ भाव का संबंध मन-भावनाओं के विकास से है।

मनुष्य के पास शरीर, धन, परिश्रम, शक्ति, इच्छा सभी हों, किंतु कार्य करने की तकनीकी जानकारी का अभाव हो अर्थात् वैचारिक शक्ति का अभाव हो अथवा कर्म विधि का ज्ञान न हो तो जीवन में उन्नति मिलना मुश्किल है। पंचम भाव का संबंध मनुष्य की वैचारिक शक्ति के विकास से है।

यदि मनुष्य अड़चनों, विरोधी शक्तियों, मुश्किलों आदि से लड़ न पाए तो जीवन निखरता नहीं है। अत: षष्ठ भाव शत्रु, विरोध, कठिनाइयों आदि से संबंधित है।

मनुष्य में यदि दूसरों से मिलकर चलने की शक्ति न हो और वीर्य शक्ति न हो तो वह जीवन में असफल समझा जाएगा। अत: मिलकर चलने की आदत व वीर्यशक्ति आवश्यक है और उसके लिए भागीदार, जीवनसाथी की आवश्यकता होती ही है। अत: वीर्य जीवनसाथी, भागीदार आदि का विचार सप्तम भाव से किया जाता है।

यदि मनुष्य अपने साथ आयु लेकर न आए तो उसका रंग-रूप, स्वास्थ्य, गुण, व्यापार आदि कोशिशें सब बेकार अर्थात् व्यर्थ हो जाएंगी। अत: अष्टम भाव को आयु भाव माना गया है। आयु का विचार अष्टम से करना चाहिए।

नवम स्थान को धर्म व भाग्य स्थान माना है। धर्म-कर्म अच्छे होने पर मनुष्य के भाग्य में उन्नति होती है और इसीलिए धर्म और भाग्य का स्थान नवम माना गया है।

दसवें स्थान अथवा भाव को कर्म का स्थान दिया गया है। अत: जैसा कर्म हमने अपने पूर्व में किया होगा उसी के अनुसार हमें फल मिलेगा।

एकादश स्थान प्राप्ति स्थान है। हमने जैसे धर्म-कर्म किए होंगे उसी के अनुसार हमें प्राप्ति होगी अर्थात् अर्थ लाभ होगा, क्योंकि बिना अर्थ सब व्यर्थ है आज इस अर्थ प्रधान युग में।

द्वादश भाव को मोक्ष स्थान माना गया है। अत: संसार में आने और जन्म लेने के उद्देश्य को हमारी जन्मकुंडली क्रम से इसी तथ्य को व्यक्त करती है।

क्या आप है भाग्यशाली, जानिए कुंडली से

जन्मकुंडली में बीच के स्थान यानी लग्न से लेकर नौवां स्थान भाग्य का माना जाता है। यह स्थान तय करता है कि व्यक्ति का भाग्य कैसा होगा, कब चमकेगा और कब उसे प्रगति के मार्ग पर ले जाएगा। आइए जानते हैं पत्रिका के भाग्य भाव की रोचक जानकारी-

अगर पत्रिका में नवम भाव का स्वामी नवम भाव में ही हो तो ऐसा जातक भाग्य लेकर ही पैदा होता है। उसे जीवन में तकलीफ नहीं आती। यदि इस भाव के स्वामी रत्न का धारण विधिपूर्वक कर लें तो तेजी से भाग्य बढ़ने लगता है।

* नवम भाव का स्वामी अष्टम भाव में हो तो भाग्य भाव से द्वादश होने के कारण व अष्टम अशुभ भाव में होने के कारण ऐसे जातकों को अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। अत: ऐसे जातक नवम भाव की वस्तु को अपने घर की ताक पर एक वस्त्र में रखें तो भाग्य बढ़ेगा।

* नवम भाग्यवान का स्वामी षष्ट भाव में हो तो उसे अपने शत्रुओं से भी लाभ होता है। नवम षष्ट में उच्च का हो तो वो स्वयं कभी कर्जदार नहीं रहेगा न ही उसके शत्रु होंगे। ऐसी स्थिति में उसे उक्त ग्रह का नग धारण नहीं करना चाहिए।

* नवम भाव का स्वामी यदि चतुर्थ भाव में स्वराशि या उच्च का या मित्र राशि का हो तो वह उस ग्रह का रत्न धारण करें तो भाग्य में अधिक उन्नति होगी। ऐसे जातकों को जनता संबंधित कार्यों में, राजनीति में, भूमि-भवन-मकान के मामलों में सफलता मिलती है। ऐसे जातक को अपनी माता का अनादर नहीं करना चाहिए।

* नवम भाव का स्वामी यदि नीच राशि का हो तो उससे संबंधित वस्तुओं का दान करना चाहिए। जबकि स्वराशि या उच्च का हो या नवम भाव में हो तो उस ग्रह से संबंधित वस्तुओं के दान से बचना चाहिए।

* नवम भाव में गुरु हो तो ऐसे जातक धर्म-कर्म को जानने वाला होगा। ऐसे जातक पुखराज धारण करें तो यश-प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

* नवम भाव में स्वराशि का सूर्य या मंगल हो तो ऐसे जातक उच्च पद पर पहुंचते हैं। सूर्य व मंगल जो भी हों उससे संबंधित रंगों का प्रयोग करें तो भाग्य में वृद्धि होगी।

* नवम भाव का स्वामी दशमांश में स्वराशि या उच्च का हो व लग्न में शत्रु या नीच राशि का हो तो उसे उस ग्रह का रत्न पहनना चाहिए तभी राज्य, व्यापार, नौकरी जिसमें हाथ डाले वह जातक सफल होगा।

* नवम भाव की महादशा या अंतरदशा चल रही हो तो उस जातक को उक्त ग्रह से संबंधित रत्न अवश्य पहनना चाहिए। इस प्रकार हम अपने भाग्य में वृद्धि कर सफलता पा सकते हैं।

कुंडली बताए, कैसा करियर बनाएं

एक सामान्य अनगढ़ पत्थर को देखकर क्या सोचेंगे? किन्तु एक मूर्तिकार पत्थर को दूर से देखकर ही उसकी क्षमता और संभावना को बता सकता है। वह तुरंत कह देगा कि इस पत्थर से कौन-सी मूर्ति प्रकट हो सकती है।

बिल्कुल ऐसा ही सटीक गणित एक जानकार ज्योतिषी का होता है, जो इंसान की कुंडली देखकर तुरंत उसका संभावित किन्तु अचूक भविष्य बता देता है।

कुंडली को देखकर किसी के सफलतम करियर की दिशा बता देना ज्योतिष के लिए पूरी तरह संभव है। यह कैसे होता है, आइए देखें :-

सूर्य और मंगल सोच और साहस के परम शुभ ग्रह माने गए हैं। सूर्य को आत्मा का कारक ग्रह कहा गया है और शोधपरक, आविष्कारक, रचनात्मक क्षेत्र से संबंधित कार्यों में इनका खास दखल रहता है। मशीनरी अथवा वैज्ञानिक कार्यों की सफलता सूर्यदेव के बगैर संभव ही नहीं है।

जब यही सूक्ष्म कार्य मानव शरीर से जुड़ जाता है तो शुक्र का रोल आरंभ हो जाता है, क्योंकि मेडिकल एस्ट्रोलॉजी में शुक्र तंत्रिका तंत्र विज्ञान के कारक हैं। यानी शुक्र को न्यूरोलॉजी और गुप्त रोग का ज्ञान देने वाला माना गया है। सजीव में शुक्र का रोल अधिक रहता है और निर्जीव में सूर्य का रोल अधिक रहता है।

यदि शुक्र और सूर्य आपकी कुंडली में एक साथ हैं और दस अंश की दूरी पर हैं तो यह मानकर चलें कि इनका फल आपके ऊपर अधिक घटित होगा। तीसरे भाव, पांचवें भाव, दशम भाव और एकादश भाव में इनकी स्थिति आपके कुशल वैज्ञानिक, आविष्कारक, डॉक्टर, संगीतज्ञ, फैशन डिजाइनर, हार्ट अथवा न्यूरो सर्जन बना सकती है।

इन दोनों की युति में शुक्र बलवान हो, तो स्त्री रोग विशेषज्ञ बना सकते हैं। साथ ही ललित कला और फिल्म उद्योग में संगीतकार आदि बन सकते हैं। जब सूर्य के साथ मंगल मिले हैं, तो पुलिस, सेना, इंजीनियर, अग्निशमन विभाग, कृषि कार्य, जमीन-जायदाद, ठेकेदारी, सर्जरी, खेल, राजनीति तथा अन्य प्रबंधन कार्य के क्षेत्र में अपना भाग्य आजमा सकते हैं।

यदि इनकी युति पराक्रम भाव में दशम अथवा एकादश भाव में हो इंजीनियरिंग, आईआईटी वैज्ञानिक बनने के साथ-साथ अच्छे खिलाड़ी और प्रशासक बनना लगभग सुनिश्चित कर देती है। अधिकतर वैज्ञानिक, खिलाड़ियों और प्रभावशाली व्यक्तियों की कुंडली में यह युति और योग देखे जा सकते हैं। आज के प्रोफेशनल युग में इनका प्रभाव और फल चरम पर रहता है।

यदि कुंडली में मंगल, सूर्य तीसरे, दसवे या ग्याहरवें भाव में हो तो अन्य ग्रहों के द्वारा बने हुए योगों को ध्यान में रखकर उपरोक्त कहे गए क्षेत्रों में अपना भाग्य आजमाना चाहिए।

यदि इनके साथ बुध भी जुड़ जाएं तो एजुकेशन, बैंक और बीमा क्षेत्र में किस्मत आजमा सकते हैं।

लेकिन, इसके लिए कुंडली में बुध ओर गुरु की स्थिति पर ध्यान देने की जरूरत है। वास्तुकला तथा अन्य नक्काशी वाले क्षेत्रों के दरवाजे भी आपके लिए खुल जाएंगे, इसलिए कुंडली में अगर सूर्य, मंगल की प्रधानता हो तो इनके कारक अथवा संबंधित क्षेत्र अति लाभदायक और कामयाबी दिलाने वाले रहेंगे, इसलिए जो बेहतर और आपकी प्रकृति को सूट करें वही क्षेत्र चुनें।

जानें क्या कहते हैं जन्मकुंडली के फल-कथन

किसी भी इंसान के जीवन में क्या होगा, कब होगा या उसका जीवन कैसा बीतेगा इसका कथन व्यक्ति की जन्मकुंडली में होता है। जन्मकुंडली के फल-कथन के माध्यम से ज्योतिष मनुष्य के कर्म, गति और भाग्य के बारे में कई बातें बता सकते हैं। इसमें भाव तथा ग्रहों के विश्लेषण का बहुत महत्व होता है।

जिस भाव में जो राशि होती है उसी राशि के स्वामी ग्रह को उस भाव का भावेश कहते हैं।

तृतीय, षष्ठ, एकादश भावों के पापी ग्रहों का रहना शुभ माना जाता है।

षष्ठ, अष्टम एवं द्वादश भाव के स्वामी जिन भावों में रहते हैं, उसका वह अनिष्ट करते हैं यदि वह स्वग्रही अथवा उच्च न हो तो।

अपने स्वामी ग्रह से देखा जाने वाला भाव बलवान व शुभ होता है। अष्टम व द्वादश भाव में सभी ग्रह अनिष्ट फलप्रद होते हैं, किंतु शुक्र द्वादश स्थान में बहुत प्रसन्न रहता है क्योंकि शुक्र एक भोगात्मक ग्रह है तथा द्वादश स्थान भोग स्थान है।

छठे भाव अथवा स्थान में भी शुक्र सम्पन्न रहता है, क्योंकि छठे स्थान से द्वादश स्थान पर शुक्र की सप्तम दृष्टि पड़ती है। अत: छठे स्थान में आया शुक्र धन के लिए शुभ होता है और भोग-विलास की वस्तुएं देता है।

ग्रह अपने भाव केन्द्रीय, त्रिकोण, पंचम, चतुर्थ, दशम हो तो शुभ होता है। किंतु ग्रह का मित्र राशि में अथवा स्वग्रही अथवा उच्च होना अथवा वक्री होना अनिवार्य है।

सूर्य व मंगल को दशम भाव में, बुध व बृहस्पति को लग्न में, शुक्र व चंद्रमा को चतुर्थ में और शनि को सप्तम भाव में दिग्बल की प्राप्ति होती है

मंगल और गुरु परस्पर शत्रु ग्रह हैं

आचार्य वराहमिहिर के पूर्व प्रकरण 'मृच्छकटिकम्' के लेखक राजा शूद्रक ने अपने ग्रंथ में एक स्थल पर कहा है कि 'अंगारम विरुद्धस्य' प्रक्षीणस्य बृहस्पते:' अर्थात मंगल और गुरु परस्पर शत्रु ग्रह हैं। यह धारणा आचार्य वराहमिहिर के बाद से बदल गई। किंतु महाकवि कालिदास का यह कथन है कि-

पुराणभिर्व्यव नसाधु सर्व न यापि
काव्य न नवभिल वधम'।
संत: परिक्ष्यंतरद भजंते
मुढ़ पर प्रत्यय नैव बुद्धि:।

अर्थात इस संसार में न तो सब नया अच्छा, न ही पुराना अच्छा है। सज्जनों को परीक्षा लेकर ही उसके विषय में अपनी व्याख्या अपने स्वयं के मत पर निर्धारित करनी चाहिए।

इसी मत के अनुसार अनेक उदाहरणों के आधार पर इसे ठीक पाया गया। स्वयं आचार्य शूद्रक न केवल राजा थे, अपितु अनेक शास्त्रों के प्रकांड विद्वान भी थे। उन्होंने यह पंक्ति अपने समय में प्रचलित ज्योतिष के सिद्धांत के आधार पर और स्वयं अनुभव लेकर ही लिखी होगी।

'वृहत जातक' में भी यह ग्रह विरोधी बताए गए हैं। मंगल की राशियां मेष और वृश्चिक हैं तथा गुरु की धनु तथा मीन मेष से मीन का संबंध 12वीं राशि से आता है तथा मेष और धनु राशि अग्नि तत्व का नेतृत्व करती है।

अत: जहां दो अग्नि राशि वाले होंगे, वहां परस्पर ईर्ष्या-द्वेष की भावना अवश्य होगी ही। दोनों में सहनशीलता का अभाव, कलह, बैर की वृद्धि ही करेगा। धनु, वृश्चिक का संबंध भी द्विद्वांदश का है, जो शुभ नहीं है। वृश्चिक व मीन राशि दोनों जल प्रधान होने से अति भावुकतावश अग्नि तत्व के समान ही स्थिति निर्मित करेंगी।

गुरु तत्व प्रधान मंगल रज तत्व प्रधान होना भी स्वभाव में जमीन-आसमान का फर्क स्पष्ट बताता है।

पागल व्यक्तियों पर भी खूनी रंग मानसिक उत्तेजना को बढ़ाने वाला ही होता है, किंतु गुरु के गहरे या हल्के पीले सफेद वर्ण में यह बात न होकर मानसिक शांति देने की प्रबल शक्ति है।

बृहस्पति कहां देवता के गुरु और कहां मंगल अग्नि के समान प्रखर, तेज, दीप्त, भूमि से जन्य (कुज-क यानी पृथ्वी उससे उत्पन्न)। (मंगल की जन्मभूमि उज्जैन (मप्र) में आज भी मंगलनाथ का विशाल मंदिर देखा जा सकता है।)

बृहस्पति के नामों में भी उसकी विशेषता स्पष्ट होती है। सुराचार्य, जीव, अंगीरस आदि। इसी प्रकार मंगल के नाम- अंगारक, कुज, भौम लोहितांग, महीसुत आदि।

गुरु, मंगल के क्षेत्र में हैं। गुरु शिक्षा विभाग, बैंक, मानसिक कार्य, लेखन आदि से संबंध रखता है तो मंगल अग्नि, बिजली संबंधित कार्य, सेना, पुलिस से संबंधित विभागों का प्रतिनिधित्व करता है। मंगल पाप ग्रह है तो गुरु शुभ ग्रह है।

मंगल, गुरु की युति व दृष्टि जातक में सात्विक गुण का ह्रास कर राजसिक गुण का समावेश कर व्यसनों को देने वाली संतान में कन्या पक्ष अधिक करने वाली, चारित्रिक दृष्टि से कमजोरी लाने वाली ही अधिकतर देखी गई है।

अनेक लंबी बीमारियों का कारण भी यह युति दृष्टि है, जो शरीर में कैल्शियम की कमी लाकर रक्ताल्पता से लंबे और भयंकर रोगों का कारण बन जाती है।

इसी गुरु-मंगल के कारण भगवान राम 14 वर्ष वनवास में रहे। रावण से विरोध की स्थिति, संतान से वियोग की स्थिति का कारण रहा।

रावण की पत्रिका में इन ग्रहों ने उसका परनारी पर आकर्षण बनाया, कुमार्ग के पथ पर अग्रसर किया, व्यक्ति में विघ्न की स्थिति बनाई। गुरु इसी कारण मारक भी बना।

एक अन्य प्रसिद्ध व्यापारी को 6 कन्या का योग पंचक पंचमेश से इनका संबंध होने से बना।

महात्मा ईसा का उनके समय प्रबल विरोध, शूल मरण भी इन्हीं ग्रहों से हुआ।

अब्दुल रहीम खानखाना का राजयोग भंग कर उन्हें 'पर घर मांगन जाय' की स्थिति तक इन ग्रहों ने ला दिया।

महात्मा गांधी की शरीर दुर्बलता का कारण तथा सुभाषचंद्र बोस की वात प्रधान उष्णोदर विकार से ग्रस्त कर विमान दुर्घटना की स्थिति भी इन्हीं ग्रहों के कारण रही है।

हस्त रेखा शास्त्र : कैसे जानें विद्या रेखा

हमारे हाथ में कुछ ऐसी रेखाएं होती हैं, जो मुख्य रेखाएं तो नहीं होतीं परंतु वे महत्वपूर्ण रेखाएं होती हैं।

यह रेखाएं हस्त में स्वतंत्र रूप से किसी भी रेखा की सहायक बनकर अपना प्रभाव बनाए रखती हैं। यह रेखाएं प्रायः कुछ के हाथों में नहीं होतीं। जैसे कि :

* विद्या रेखा मध्यमा तथा अनामिका अंगुलियों के बीच में पाई जाती है, जो सूर्य पर्वत क्षेत्र की ओर झुकती हुई खड़ी होती है।

* जिन व्यक्तियों के हाथ में ऐसी रेखा होती है, वे निर्धन (साधारण) घर में जन्म लेकर भी श्रेष्ठ विद्या उपार्जित करने में सफल होते हैं।

* ऐसे व्यक्ति ज्ञानवान और बुद्धिमान रहते हैं।

* सभ्य समाज में उनका आदर होता है तथा अपनी बुद्धि के बल पर पूर्ण सफलता प्राप्त करने में सक्षम होते हैं।

रेखाओं में छुपा है आयु का वरदान

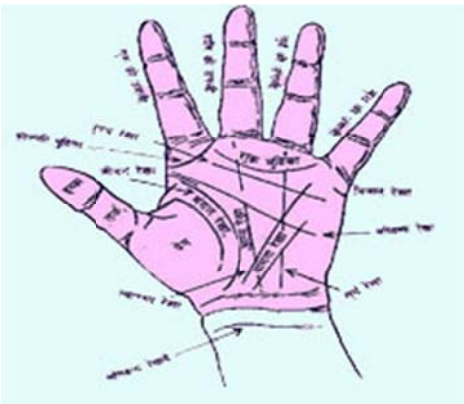

सामुद्रिक शास्त्र समुद्र के समान अथाह सागर है। इसमें जो जितना पारंगत होता है, वो उतना ही जान पाता है। हाथ की रेखाएं सदैव एक समान नहीं रहतीं। यह रेखाएं बनती-बिगड़ती रहती हैं, अतः भविष्य कथन में परिवर्तन आता रहता है। स्वच्छ सीधी रेखाएं जहां उत्तम स्वास्थ्य को दर्शाती हैं, वहीं प्रगति में भी सहायक मानी जाती हैं। अस्त-व्यस्त, कटी-टूटी हो तो वह अस्वस्थ व प्रगति में बाधक रहती हैं।

बुध रेखा हथेली में किसी भी स्थान से निकल सकती है। इसकी सबसे अच्छी स्थिति यह मानी गई है कि बुध रेखा की स्थिति भाग्य रेखा और जीवन रेखा से जितनी अधिक दूर हो उतनी ही शुभ फलदायक होती है। बुध रेखा कहीं से भी जाए इसका अंत कनिष्ठिका अंगुली पर ही होता है। यदि किसी भी हथेली में यह रेखा है परंतु जीवन रेखा से पर्याप्त दूर है, साथ ही मणिबंध विघ्नरहित है तो वह व्यक्ति निश्चित रूप से दीर्घायु होगा।

अशुभ चिन्हों से मुक्त निर्दोष बुध रेखा वाला व्यक्ति पाचन शक्ति का धनी और स्वस्थ, सबल गुर्दों का स्वामी होता है। निर्दोष बुध रेखा के साथ-साथ यदि हथेली में हृदय, मस्तिष्क और भाग्य रेखाएं निर्दोष रूप में विद्यमान हों, तो ऐसी हथेली वाली बुध रेखा व्यक्ति की शारीरिक क्षमता, आरोग्य और जीवन शक्ति की वृद्धि करती है।

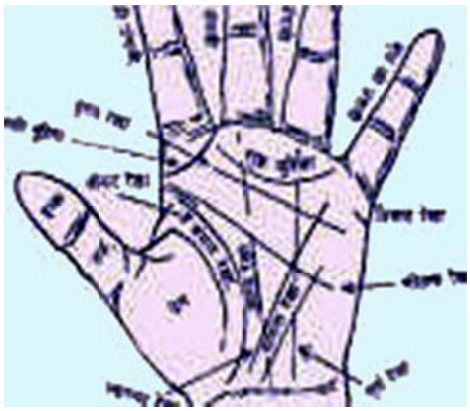

यदि बुध रेखा टूटी, छिन्न-भिन्न टेढ़ी-मेढ़ी और मार्ग से हटी हुई हो तो समझना चाहिए कि ऐसा व्यक्ति उदर विकारों से ग्रस्त होगा। पाचन शक्ति की कमी स्नायु तंत्र में अतिक्रम जोड़ों का दर्द अन्य प्रकार के वात-विकार, मानसिक व्याधियों की आशंका और दुर्बलता क्षीणता जैसे रोग होते हैं। बुध रेखा अशुभ मानी जाती है। जन्म लग्न में भी बुध नीच का या शत्रु मैत्री होगा।

बुध रेखा का लहरदार होना यह संकेत देता है कि जातक को लीवर संबंधित रोग होगा। लहरदार या जंजीरदार रेखा टूटी, अस्त-व्यस्त हो तो वह मंदबुद्धि, आलसी, निकम्मे, दुविधाग्रस्त तथा कार्य क्षेत्र में पिछड़े हुए होते हैं। अपने दैनिक जीवन के कार्यकलाप, व्यवसाय, आगामी योजना और अन्य व्यावहारिक क्षेत्रों में भी ऐसे लोग प्रायः अस्थिर मन, अनिश्चित और आत्मविश्वास से रहित होते हैं।

ये कोई भी कार्य करें सफलता की उम्मीद बहुत कम कर पाते हैं। ऐसे जातक आशंका में रहते हैं। यदि बुध रेखा ऊपर अंगुलियों की ओर, बुध पर्वत की ओर अग्रसर है और उसके मार्ग में कोई बिंदु दिख रहा है, साथ ही किसी पर्वत पर विभिन्न रेखाओं का चक्रव्यूह जैसा दिखाई दे रहा है तो यह निश्चित है कि वह अवश्य ही अस्वस्थ्ता के दौर से गुजर रहा है अथवा कोई रोग-विकार इसे शीघ्र होगा।

बुध रेखा पर कहीं भी द्वीप का चिन्ह होना यह तथ्य प्रकट करता है कि इस जातक को आयु रेखा से निर्दिष्ट व्यय-क्रम में स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं पीड़ित करेंगी। बुध पर्वत तक पहुंचने वाली निर्दोष बुध रेखा व्यक्ति की लंबी आयु का वरदान होती है। यदि यह रेखा चंद्र पर्वत से प्रारंभ हो तो व्यक्ति अपने जीवन में अनेक यात्राएं करता है।

तर्जनी की महिमा सबसे निराली!

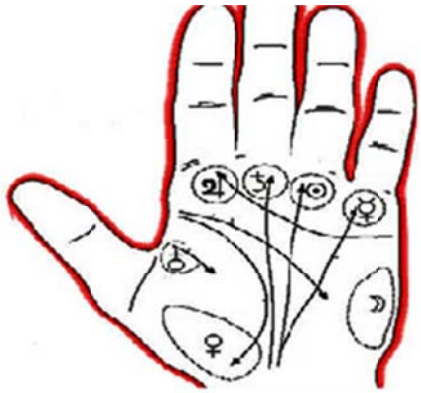

हाथ की पांच उंगलियों में अंगूठे व मध्यमा के बीच की उंगली तर्जनी कहलाती है। अन्य उंगलियों की अपेक्षा इसका विशेष महत्व देखा गया है। विभिन्न नित्य कार्यों के अलावा धार्मिक कार्यों, ज्योतिष, नृत्य मुद्राओं, योग मुद्राओं आदि में इसकी भूमिका होती है।

<u>निम्न बातें (तथ्य) तर्जनी के इस महत्व को पुष्ट करती हैं : -</u>

* पांच उंगलियों में पांच तत्व निहित हैं- अंगूठा-अग्नि, तर्जनी-वायु, मध्यमा-आकाश, अनामिका-पृथ्वी व छोटी में जल। इनमें तर्जनी का 'वायु' तत्व सभी को संतुलित रखने में सहायक होता है।

* तर्जनी व अंगूठे के स्पर्श से की जाने वाली 'ज्ञान मुद्रा' ज्ञान वृद्धि व मानसिक शुद्धि करती है। साथ ही यह मुद्रा ध्यान, योग व प्राणायाम में भी प्रयुक्त होती है।

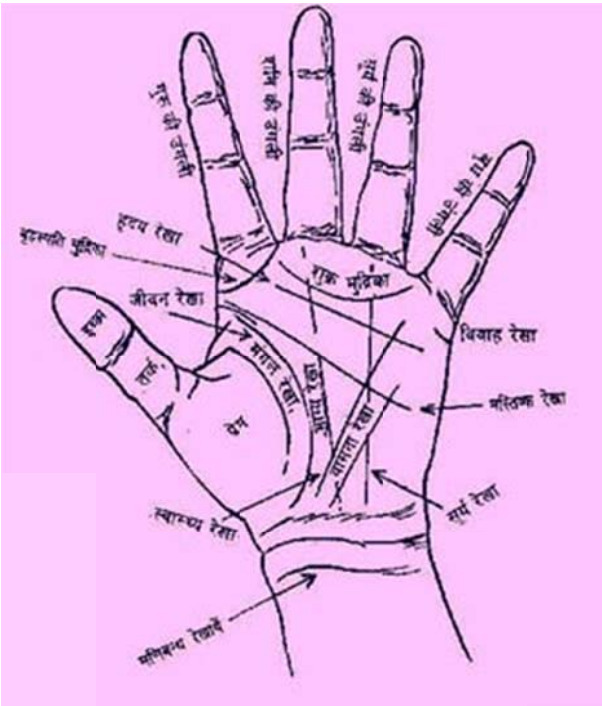

* नृत्य अथवा करतब में थाली या किसी चीज को इसी उंगली पर घुमाया जाता है। कहते हैं श्रीकृष्ण ने भी सुदर्शन इसी पर थामा था।

* बाण (तीर) चलाने में अंगूठे या मध्यमा के साथ तर्जनी का संग जरूरी है।

* चुप रहने के इशारे में इसी उंगली को मुंह पर रखा जाता है।

* जाने का इशारा करना, किसी को बाहर करना हो, तर्जनी ही उठती है।

* कोई खाद्य चखना हो, इसी को डूबाकर, छूकर मुंह तक लाया जाता है।

* इनके अतिरिक्त भी कई कार्य हैं जिनमें अंगूठे के साथ तर्जनी प्रयुक्त की जाती है जैसे- कलम पकड़ना, सुई में धागा पिरोना, कंचा फेंकना, चुटकी भरना, बटन लगाना आदि।

हाथ की रेखाएं बताती हैं रोग

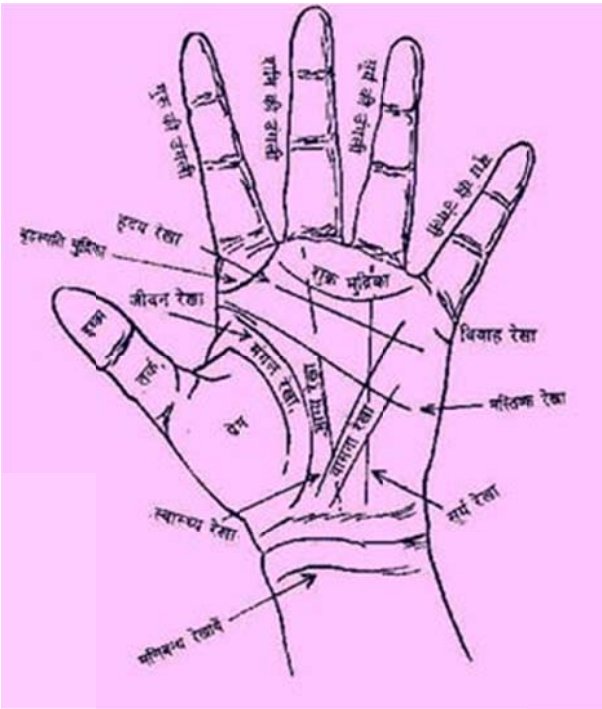

समस्त रोगों का मूल पेट है। जब तक पेट नियंत्रण में रहता है, स्वास्थ्य ठीक रहता है। ज्योतिषीय दृष्टि से हस्तरेखाओं के माध्यम से भी पेटजनित रोग और पेट की शिकायतों के बारे में जाना जा सकता है। हथेली पर हृदय रेखा, मस्तिष्क रेखा और नाखूनों के अध्ययन के साथ ही मंगल और राहु किस स्थिति में हैं, यह देखना बहुत जरूरी है।

जिन व्यक्तियों का मंगल अच्छा नहीं होता है, उनमें क्रोध और आवेश की अधिकता रहती है। ऐसे व्यक्ति छोटी-छोटी बातों पर भी उबल पड़ते हैं। अन्य व्यक्तियों द्वारा समझाने का प्रयास भी ऐसे व्यक्तियों के क्रोध के आगे बेकार हो जाता है। क्रोध और आवेश के कारण ऐसे लोगों का खून एकदम गर्म हो जाता है। लहू की गति (रक्तचाप) के अनुसार क्रोध का प्रभाव भी घटता-बढ़ता रहता है। राहु के कारण जातक अपने आर्थिक वादे पूर्ण नहीं कर पाता है। इस कारण भी वह तनाव और मानसिक संत्रास का शिकार हो जाता है।

हथेली पर हृदय रेखा टूट रही हो या फिर चैननुमा हो, नाखूनों पर खड़ी रेखाएं बन गई हों तो ऐसे व्यक्ति को हृदय संबंधी शिकायतें, रक्त शोधन में अथवा रक्त संचार में व्यवधान पैदा होता है। यदि जातक का चंद्र कमजोर हो तो उसे शीतकारी पदार्थ जैसे दही, मट्ठा, छाछ, मिठाई और शीतल पेयों से दूर रहना चाहिए।

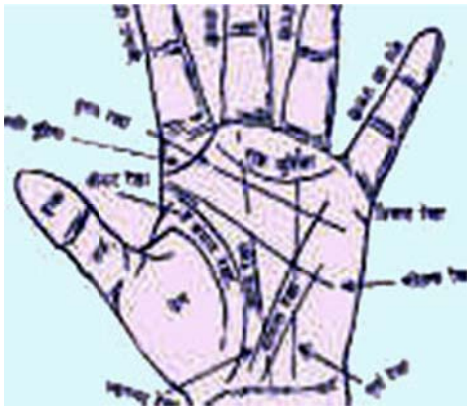

इसी तरह मंगल अच्छा न हो तो मिर्च-मसाले वाली खुराक नहीं लेनी चाहिए। तली हुई चीजें जैसे- सेंव, चिवड़ा, पापड़, भजिए, पराठे इत्यादि से भी परहेज रखना चाहिए। ऐसे जातक को चाहिए कि वह सुबह-शाम दूध पीएं, देर रात्रि तक जागरण न करें और सुबह-शाम के भोजन का समय निर्धारित कर लें। सुबह-शाम केले का सेवन भी लाभप्रद होता है।

पेट की खराबी से शरीर में गर्मी बढ़ जाती है और फिर इसी वजह से रक्तविकार पैदा होते हैं, जो आगे चलकर कैंसर का रूप तक अख्तियार कर सकते हैं। यह मत विश्व प्रसिद्ध हस्तरेखा शास्त्री डॉ. आउंट लुईस का है। जिस व्यक्ति के हाथ का आकार व्यावहारिक हो और साथ ही व्यावहारिक चिह्नों वाला हो, तो ऐसा जातक अपने जीवन में काफी नियमित रहता है।

ऐसा जातक वृद्धावस्था में भी स्वस्थ रहता है। इसी तरह विशिष्ट बनावट के हाथ या कोणीय आकार के हाथ, जिसमें चंद्र और मंगल पर शुक्र का अधिपत्य हो, तो ऐसे लोग स्वादिष्ट भोजन के शौकीन होते हैं। शुक्र प्रधान होने के कारण भोजन का समय नियमित नहीं रहता है। ऐसे में उदर विकार स्वाभाविक ही है। इस पर यदि हृदय रेखा, मस्तिष्क रेखा और मंगल-राहु अच्छे न हो, तो रक्तजनित रोगों की आशंका बढ़ जाती है।

हस्तरेखा देखकर कैंसर की पूर्व चेतावनी दी जा सकती है और इस जानलेवा बीमारी के संकेत चिह्न हथेली पर देखे जा सकते हैं। मस्तिष्क रेखा पर द्वीप समूह या पूरी मस्तिष्क रेखा पर बारीक-बारीक लाइनें हो, तो ऐसे जातक को कैंसर होने की पूरी आशंका रहती है। ऐसी स्थिति में यदि मेडिकल टेस्ट करा लिया जाए और उसमें कोई लक्षण न मिलें, तब भी जातक की जीवनशैली में आवश्यक फेरबदल कर उसे भविष्य में कैंसर के आक्रमण से बचाया जा सकता है।

22 राशियों में से आपकी कौन-सी राशि है?

वैज्ञानिकों ने हमारी आकाश गंगा को 88 तारामंडल (राशियों) में बांट रखा है और वेदों ने 27 नक्षत्रों में। संपूर्ण 88 राशियों का धरती पर प्रकाश पड़ता हैं, जिससे धरती पर थोड़ा ही सही पर परिवर्तन जरूर होता है।
इन 88 में से भी 22 ऐसी राशियां हैं जिनको 12 माह में स्थान मिला है, अर्थात् उक्त राशियों निम्न समय में धरती के ऊपर से गुजरती हैं तो निश्चित ही उक्त समय में जन्म लेने वाले व्यक्ति की राशि वहीं होना चाहिए?
यहां प्रस्तुत है जापान और पश्चिमी जगत में प्रचलित 22 राशियों का परिचय।
1. इगल (Eagle): 14 जनवरी से 28 जनवरी तक।
2. डॉल्फिन (Dolphin) : 29 जनवरी से 8 फरवरी तक।
3. हंस : 9 फरवरी से 29 फरवरी तक।
4. नदी (River) : 1 मार्च से 12 मार्च और 10 अप्रैल से 18 अप्रैल, 9 मई से 15 मई के बीच।
5. काव्य उमंग (Pegasus) : 13 मार्च से 1 अप्रैल।
6. एंड्रोमेडा (Andromeda) एक जापानी वृक्ष का नाम : 2 अप्रैल से 9 अप्रैल, 19 अप्रैल से 8 मई।
7. पेर्सेउस (Perseus) एक ग्रीक देवता का नाम : 16 मई से 31 मई तक।
8. मृग नक्षत्र (Orion): 1 जून से 7 जून और 17 जून से 27 जून के बीच।
9. सारथी (Charioteer) : 8 जून से 16 जून।
10. कुत्ता (Dogs) : 28 जून से 7 जुलाई और 18 जुलाई 25 जुलाई तक।
11. आर्गनॉट (घोंघा) के पोत (Ship of the Argonauts) : 8 जुलाई से 17 जुलाई तक और 22 सितंबर से 28 सितंबर तक।
12. सपक्ष सर्प (The Dragon): 26 जुलाई से 7 अगस्त तक और 17 दिसंबर से 23 दिसंबर तक।
13. सप्तऋषि (The Great Bear) : 8 अगस्त से 15 अगस्त 25 अगस्त से 10 सितंबर तक।
14. समुद्र नाग (The Sea Serpent or Hydra) : 16 अगस्त से 23 अगस्त तक।
15. प्याला (The Cup) : 11 सितंबर से 21 सितंबर तक।16. काला कौआ (The Raven, Corvus) : 29 सितंबर से 11 अक्टूबर तक।
17. रक्षक भालू (The Bear Keeper, Bootes, Herdsman) : 12 अक्टूबर से 26 अक्टूबर तक।
18. मुकुट (The Crown of the North Wind, Borealis) : 27 अक्टूबर से 10 नवंबर तक।
19. सांप (Serpent) : 11 नवंबर से 19 नवंबर और 24 दिसंबर से 28 दिसंबर तक।
20. बुद्धिमान किन्नर (The Wise Centaur) : 20 नवंबर से 5 दिसंबर तक।
21. सर्पधर (Ophiuchus) : 6 दिसंबर से 16 दिसंबर तक।
22. वीणा (The Lyre of Orpheus or Lyra): 29 दिसंबर से 13 जनवरी।

शारीरिक विशेषताओं से जानिए सौभाग्य

कहते हैं किसी इंसान को देखकर ही उसकी चारित्रिक विशेषताओं का आकलन किया जा सकता है। चेहरा हमारे व्यक्तित्व और स्वभाव का प्रतिनिधित्व करता है। मन के भीतर जो भाव चलते हैं वही चेहरे पर प्रतिबिंबित होते हैं। आइए जानते हैं ज्योतिष के आधार पर मस्तक और बाल की प्रकृति से कैसे की जाती है व्यक्ति की पहचान।
उन्नत ललाट (ऊंचा माथा)- सौभाग्य एवं धनवृद्धि का सूचक है। ऐसा मस्तक व्यक्ति को तेजस्वी तथा बुद्धिमान

दर्शाता है।

दबा हुआ ललाट- यदि किसी व्यक्ति का माथा मध्य में दबा हुआ हो, मस्तक उभरा हुआ तथा बाल छोटे हों वह बड़ा भाग्यवान होता है। समाज में सम्मान पाता है तथा कुशाग्र बुद्धि होता है।

मोटे ललाट छोटे बाल- जिस व्यक्ति का सिर मोटा हो, मस्तक उभरा हुआ तथा बाल छोटे हों, वह बड़ा भाग्यवान होता है। समाज में सम्मान पाता है तथा कुशाग्र बुद्धि होता है।

खल्वाट सर- यानी किसी व्यक्ति के सिर के अग्र भाग में बाल न हों और बालों की लहर पीछे की ओर हो, वह व्यक्ति धनवान, युक्तिशील, चतुर तथा प्रत्येक कार्य में सिद्धि पाने वाला होता है।

चोटी में सफेद बाल- ऐसे व्यक्ति में अद्भुत वाक्-शक्ति होती है, प्रभावशाली भाषण द्वारा जनता को आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं। वह चतुर एवं अहंकार से युक्त होता है।

सिर पर बालों की चोटी- ऐसा व्यक्ति धार्मिक आचरण वाला तथा ईश्वर ज्ञान की लालसा रखने वाला होता है। आंतरिक दृष्टि से रहस्यवादी होता है।

मुलायम बाल- सिर पर कोमल तथा मुलायम बालों का होना सौभाग्य को प्रकट करता है।

माथा बहुत छोटा तथा गड्ढेदार- ऐसा चिह्न दुर्भाग्य तथा धनहानि का सूचक है। ऐसे व्यक्ति प्राय: संकीर्ण विचारों के होते हैं, मन की गांठ नहीं खोलते।

सुंदर चेहरा छोटा मस्तक- ऐश्वर्य, धन तथा भोग वृत्ति को दर्शाता है। ऐसा व्यक्ति धर्म एवं शुभ कार्यों से वंचित होता है।

बड़ा मस्तक सुंदर चेहरा- दिव्य ज्ञान से युक्त व्यक्ति होता है। लोक कल्याणकारी होता है तथा परोपकार के लिए धन का संचय करता है।

मध्य से अधिक उभरा मस्तक- ईश्वर की दिव्य शक्ति को दर्शाता है। ऐसा व्यक्ति आदर्श जीवन व्यतीत करता है।

नासिका- लंबी नासिका जो अग्रभाग से छोटी हो, ऐसा व्यक्ति अहंकारी होता है। हर काम स्वार्थ एवं चतुराई से करता है। जिस व्यक्ति की नासिका आगे से बड़ी हो तथा नथुने कुछ खुले हो, वह धनवान, समाज में प्रतिष्ठा पाने वाला तथा स्त्री पक्ष की ओर से अधिक सुख भोगने वाला होता है।

जन्म नक्षत्र से जानिए कैसे हैं आप

आकाश मंडल में तारों के समूह को नक्षत्र कहते हैं। हम देखते हैं कि तारों के समूह से कहीं अश्व, कहीं शकट, सर्प आदि के आकार बन जाते हैं। ये आकृतियां ही नक्षत्र हैं।

जिस प्रकार लोक व्यवहार में एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी मील, कोस या किलोमीटर में नापी जाती है। उसी प्रकार आकाश मंडल की दूसरी नक्षत्रों से ज्ञात की जाती है।

ज्योतिष शास्त्र में समस्त आकाश मंडल को 27 भागों में विभक्त कर प्रत्येक भाग का नाम एक-एक नक्षत्र रखा गया है। सूक्ष्मता से समझाने के लिए प्रत्येक नक्षत्र के चार भाग किए गए हैं जो चरण कहलाते हैं। अभिजित को 28वां नक्षत्र माना गया है और इसका स्वामी ब्रह्मा को कहा गया है।

ज्योर्तिविदों का अभिमत है कि उत्तराषाढ़ा की अंतिम 15 घड़ियां और श्रावण के प्रारंभ की चार घड़ियां, इस प्रकार 19 घड़ियों के मान वाला अभिजित नक्षत्र होता है। यह समस्त कार्यों में शुभ माना गया है।

<u>आइए जानते हैं कैसे होते हैं अश्विनी नक्षत्र वाले :</u>

शास्त्रों के अनुसार अश्विनी नक्षत्र में जन्म होने से मनुष्य सुंदर स्वरूप, स्थूल शरीर, अति बुद्धिमान, अति प्रज्ञा वाला, नम्रता सहित, सत्ययुक्त, सेवाभावी, कार्यों में पटु, सर्वजन प्रिय, धनवान तथा भाग्यवान होता है। यह संपूर्ण प्रकार की संपत्तियों को प्राप्त करने वाला, स्त्री और आभूषण तथा पुत्रादिर से संतोष प्राप्त करता है।
अश्विनी नक्षत्र में जन्म होने से जातक ईश्वर भक्त, चतुर, बुद्धिमानीपूर्ण कार्यों में प्रतिष्ठित, साम्यवादी, आभूषण एवं रत्नों का प्रेमी, जायदाद संबंधी मामलों से चिंताग्रस्त, क्रोधी, बड़े भाई न हों या भाई रोगग्रस्त हों, नेतृत्व प्रधान कार्यों में अभिरूचि, ज्योतिष, वैद्य, शास्त्रों में रुचि रखने वाले, भ्रमणप्रिय, चंचल प्रकृति तथा महत्वाकांक्षी विचारों के होते हैं।
इस नक्षत्र में जन्म होने पर जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल होगा। अवकहड़ा चक्र के अनुसार जातक का वर्ण क्षत्रिय, वश्य चतुष्पद, योनि अश्व, महावैर योनि महिष, गण देव तथा नाड़ी आदि है।

कुंडली के योग ही दूर करते हैं मंगल दोष

यदि प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्ठम व द्वादश भावों में कहीं भी मंगल हो तो उसे मंगल दोष कहा जाता है लेकिन उन दोषों के बावजूद अगर अन्य ग्रहों की स्थिति, दृष्टि या युति निम्नलिखित प्रकार से हो, तो मंगल दोष खुद ही प्रभावहीन हो जाता है :-
* यदि मंगल ग्रह वाले भाव का स्वामी बली हो, उसी भाव में बैठा हो या दृष्टि रखता हो, साथ ही सप्तमेश या शुक्र अशुभ भावों (6/8/12) में न हो।
* यदि मंगल शुक्र की राशि में स्थित हो तथा सप्तमेश बलवान होकर केंद्र त्रिकोण में हो।
* यदि गुरु या शुक्र बलवान, उच्च के होकर सप्तम में हो तथा मंगल निर्बल या नीच राशिगत हो।
* मेष या वृश्चिक का मंगल चतुर्थ में, कर्क या मकर का मंगल सप्तम में, मीन का मंगल अष्टम में तथा मेष या कर्क का मंगल द्वादश भाव में हो।
* यदि मंगल स्वराशि, मूल त्रिकोण राशि या अपनी उच्च राशि में स्थित हो।
* यदि वर-कन्या दोनों में से किसी की भी कुंडली में मंगल दोष हो तथा कुंडली में उन्हीं पाँच में से किसी भाव में कोई पाप ग्रह स्थित हो। कहा गया है -
शनि भौमोअथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौम-दोषः विनाशकृत्॥
इनके अतिरिक्त भी कई योग ऐसे होते हैं, जो मंगली दोष का परिहार करते हैं। अतः मंगल के नाम पर मांगलिक अवसरों को नहीं खोना चाहिए।
सौभाग्य की सूचिका भी है मंगली कन्या : कन्या की जन्मकुंडली में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में मंगल होने के बाद भी प्रथम (लग्न, त्रिकोण), चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम तथा दशम भाव में बलवान गुरु की स्थिति कन्या को मंगली होते हुए भी सौभाग्यशालिनी व सुयोग्य पत्नी तथा गुणवान व संतानवान बनाती है।

दशाओं की शुभता व विशेषता

1. सभी ग्रह अपनी दशा और अपनी ही अंतर्दशा में सभी फल नहीं देते। जब संबंधी ग्रह या मित्र ग्रहों की दशा आती है, तब से अपना पूर्ण फल देते हैं जैसे शनि अपना पूर्ण फल शुक्र की महादशा के समय अपनी अंतर्दशा में देगा।

2. केंद्र के स्वामी परस्पर मित्र होते हैं, त्रिकोणेश परस्पर मित्र होंगे, त्रिषड़ाय एक दूसरे से मित्र होंगे अर्थात लग्नेश-सप्तमेश, द्वितीयेश-द्वादशेश, चतुर्थेश-दशमेश, पंचमेश-नवमेश और षष्ठेश-अष्टमेश मित्र होंगे।

3. जिस ग्रह की महादशा चल रही हो, उसे दशानाथ कहा जाएगा। दशानाथ की महादशा में मित्र ग्रह अच्छा फल देंगे, बाकी की अंतर्दशा विपरीत फलदायक ही रहेगी।

4. यदि केंद्र और त्रिकोण के अधिपति परस्पर प्रेम रखते हो तो एक-दूसरे की महादशा-अंतर्दशा में शुभ फल ही प्राप्त होंगे। इनमें शत्रुता होने पर विपरीत फलों की प्राप्ति होगी।

5. मारक ग्रह अपनी दशा में कष्ट देता ही है। यदि किसी शुभ ग्रह की अंतर्दशा आती है तो भी स्वास्थ्य हानि और धन हानि होगी ही। शुभ ग्रह प्रतिष्ठा वृद्धि दे सकता है।

सूर्य की महादशा	–	०६ वर्ष
चन्द्र की महादशा	–	१० वर्ष
मंगल की महादशा	–	०७ वर्ष
राहु की महादशा	–	१८ वर्ष
गुरु की महादशा	–	१६ वर्ष
शनि की महादशा	–	१९ वर्ष
बुध की महादशा	–	१७ वर्ष
केतु की महादशा	–	०७ वर्ष
शुक्र की महादशा	–	२० वर्ष

6. राहु-केतु यदि त्रिकोण या केंद्र में हों और त्रिकोणेश या केंद्रेश के साथ हो या उनसे संबंध रखते हो तो इनकी दशा-महादशा उत्तम फलकारक होती है। योगकारी ग्रह की महादशा में इनकी अंतर्दशा भी शुभ फल देती है।

7. पाप ग्रह यानी 3, 6, 8, 12 के स्वामी की दशा होने पर उसके शत्रु शुभ ग्रह की दशा भी पाप फल करती है। मित्र शुभ ग्रह की अंतर्दशा मिश्रित फल देती है और योगकारक ग्रह शुभ हो, उसकी दशा अत्यंत हानिकारक होती है।

8.लग्नेश-त्रिकोणेश व लग्नेश-केंद्रेश के संबंध भाग्योदयकारी होते हैं व परस्पर अच्छे फल देते हैं।

9. शनि व शुक्र का यह स्वभाव है कि वह अपनी महादशा में पूर्ण फल न देकर मित्र ग्रह की अंतर्दशा में फल देते हैं।

10. षष्ठेश व अष्टमेश की दशाएँ सदैव कष्ट ही देती हैं। यदि मृत्यु योग न भी हो तो भी शरीर कष्ट तो होता ही है।

11. सभी ग्रह अपनी दशा में अपने भाव का, वे जहाँ है उस भाव का तथा संबंधी ग्रह के स्वामी भाव का फल अवश्य देते हैं।

12. वक्री ग्रह यदि पाप प्रभाव हो तो उनकी महादशा भी कष्टकारक होती है।

13. केंद्र या त्रिकोण के स्वामी शुभ प्रभाव में हो तो शुभ फल में वृद्धि होती है।

जानें ग्रहों की दशा-अंतर्दशा

1. सभी ग्रह अपनी दशा और अपनी ही अंतर्दशा में सभी फल नहीं देते। जब संबंधी ग्रह या मित्र ग्रहों की दशा आती है, तब से अपना पूर्ण फल देते हैं जैसे शनि अपना पूर्ण फल शुक्र की महादशा के समय अपनी अंतर्दशा में देगा।

2. केंद्र के स्वामी परस्पर सधर्मी (मित्र) होते हैं, त्रिकोणेश परस्पर सधर्मी होंगे, त्रिषड़ाय एक दूसरे से सधर्मी होंगे अर्थात लग्नेश-सप्तमेश, द्वितीयेश-द्वादशेश, चतुर्थेश-दशमेश, पंचमेश-नवमेश और षष्ठेश-अष्टमेश सधर्मी होंगे।
3. जिस ग्रह की महादशा चल रही हो, उसे दशानाथ कहा जाएगा। दशानाथ की महादशा में सधर्मी ग्रह अच्छा फल देंगे, बाकी की अंतर्दशा विपरीत फलदायक ही रहेगी।
4. यदि केंद्र और त्रिकोण के अधिपति परस्पर प्रेम रखते हो तो एक-दूसरे की महादशा-अंतर्दशा में शुभ फल ही प्राप्त होंगे। इनमें शत्रुता होने पर विपरीत फलों की प्राप्ति होगी।
5. मारक ग्रह अपनी दशा में कष्ट देता ही है। यदि किसी शुभ ग्रह की अंतर्दशा आती है तो भी स्वास्थ्य हानि और धन हानि होगी ही, हाँ प्रतिष्ठा वृद्धि शुभ ग्रह दे सकता है।
6. राहु केतु यदि त्रिकोण या केंद्र में हों और त्रिकोणेश या केंद्रेश के साथ हो या उनसे संबंध रखते हो तो इनकी दशा-महादशा उत्तम फलकारक होती है। योगकारी ग्रह की महादशा में इनकी अंतर्दशा भी शुभ फल देती है।
7. पाप ग्रह यानी 3, 6, 8, 12 के स्वामी की दशा होने पर उसके शत्रु शुभ ग्रह की दशा भी पाप फल करती है, मित्र शुभ ग्रह की अंतर्दशा मिश्रित फल देती है और योगकारक ग्रह शुभ हो, उसकी दशा अत्यंत हानिकारक होती है।
8.लग्नेश-त्रिकोणेश व लग्नेश-केंद्रेश के संबंध भाग्योदयकारी होते हैं व परस्पर अच्छे फल देते हैं।
9. शनि व शुक्र का यह स्वभाव है कि वह अपनी महादशा में पूर्ण फल न देकर मित्र ग्रह की अंतर्दशा में फल देते हैं।
10. षष्ठेश व अष्टमेश की दशाएँ सदैव कष्ट ही देती हैं। यदि मुत्यु योग न भी हो तो भी शरीर कष्ट तो होता ही है।
11. सभी ग्रह अपनी दशा में अपने भाव का, वे जहाँ है उस भाव का तथा संबंधी ग्रह के स्वामी भाव का फल अवश्य देते हैं।
12. वक्री ग्रह यदि पाप प्रभाव हो तो उनकी महादशा भी कष्टकारक होती है।
13. केंद्र या त्रिकोण के स्वामी शुभ प्रभाव में हो तो शुभ फल में वृद्धि होती है।

सूर्य-शनि युति : जीवन को संघर्षमय बनाती है सूर्य और शनि पिता-पुत्र होने पर भी परस्पर शत्रुता रखते हैं। वैसे भी प्रकृति का विचार करें तो ज्ञान और अंधकार साथ मिलने पर शुभ प्रभाव अनुभूत नहीं होते। सूर्य-शनि युति प्रतियुति जीवन को पूर्णत: संघर्षमय बनाते हैं।
विशेषत: जब यह युति लग्न, पंचम, नवम या दशम में हो व दोनों (सूर्य-शनि) में से कोई ग्रह इन भावों का कारक भी हो तो यह योग जीवन में विलंब लाता है। बेहद मेहनत के बाद, समय बीत जाने पर सफलता आती है। पिता-पुत्र में मतभेद हमेशा बना रहता है और दूर रहने के भी योग बनते हैं।
सतत संघर्ष से ये व्यक्ति निराश हो जाते हैं, डिप्रेशन में भी जा सकते हैं। यदि शनि उच्च का हो व कारक हो तो 36वें वर्ष के बाद, अपनी दशा-महादशा में सफलता जरूर देता है।यह युति होने पर व्यक्ति को सतत परिश्रम के लिए तैयार रहना चाहिए, पिता से मतभेद टालें, ज्ञानार्जन करें, आध्यात्मिक साधना से अपना मनोबल मजबूत करना चाहिए। सूर्य व शनि शांति के अन्य उपाय करते रहें।

सप्तम भाव बताएगा जीवन का रहस्य

दाम्पत्य जीवन तभी सही चलता है जब एक-दूसरे में सही तालमेल हो अन्यथा जीवन नश्वर ही समझो। दाम्पत्य की गाडी़ सही चले इसके लिए अपने जीवनसाथी का स्वभाव व व्यवहार के साथ वाणी भी अच्छी होना चाहिए। वहीं पति को भी अपनी पत्नी के प्रति सजग व वफादार होना चाहिए।

कई बार दाम्पत्य जीवन आर्थिक दृष्टिकोण की वजह से, अन्य संबंधों के चलते भी टूट जाता है। शंका भी दाम्पत्य जीवन में दरार का कारण बनती है। कभी-कभी पारिवारिक तालमेल का अभाव भी एक कारण बनता है। इन सबके लिए सप्तम भाव, लग्न, चतुर्थ, पंचम भाव के साथ-साथ शुक्र-शनि-मंगल का संबंध भी महत्वपूर्ण माना गया है। चतुर्थ भाव में यदि शनि सिंह राशि का हो या मंगल की मेष या वृश्चिक राशि का हो या राहु के साथ हो तो पारिवारिक जीवन कलहपूर्ण रहता है।

शनि-मंगल का दृष्टी संबंध हो या युति हो तो भी पारिवारिक जीवन नष्ट होता है। कोई भी नीच का ग्रह हो तब भी पारिवारिक कलह का कारण बनता है। यदि ऐसी स्थिति हो तो उस ग्रह से संबंधित वस्तु को जमीन में गाड़ देवें। लग्न का स्वामी नीच का हो या लग्न में कोई नीच ग्रह हो तो वह जातक को बुरी प्रवृति का बना देता है।

लग्न का स्वामी शनि मंगल से पीड़ित नहीं होना चाहिए। पंचम भाव प्रेम व सन्तान का होता है यदि यह भाव शनि-मंगल के साथ हो या दृष्टि संबंध रखता हो तो उस जातक के जीवन में सन्तान का अभाव या सन्तान से पीडा़ रहती है व उसके जीवन में प्रेम का अभाव रह सकता है। सप्तम भाव जीवनसाथी का होता है, इस भाव का स्वामी राहु से पीड़ित हो तो दाम्पत्य जीवन बाधित रहेगा। इस भाव में भावेश के साथ शनि-मंगल हो तो द्वितीय विवाह होता है या दाम्पत्य जीवन में बाधा रहती है।

सप्तमेश एक घर पीछे यानी (छठवें भाव) सप्तम से द्वादश होगा ऐसी स्थिति भी बाधा का कारण बनती है। यदि ऐसी स्थिति किसी की पत्रिका में हो तो वे उससे संबंधित वस्तु को एक दिन अपने पास रखकर सोए एवं किसी स्वच्छ जमीन में या श्मशान भूमि में गाड़ दें।

शुक्र कला, प्रेम, दाम्पत्य का कारक नीच का हो, अस्त हो या वक्री हो तो दाम्पत्य जीवन में बाधा रहती है। लग्न में मंगल हो व शनि सप्तम भावस्थ हो तो निश्चित बाधा का कारण बनता है। सप्तमेश अष्टम में होना भी कष्टकारी रहता है। शुक्र सूर्य से अस्त हो या सूर्य-बुध के साथ शुक्र का होना भी ठीक नहीं रहता।

लग्न में सूर्य या सप्तम में शनि या सूर्य हो तो विवाह में बाधा का कारण बनता है। सप्तम भाव के एक घर पीछे व एक घर आगे क्रूर ग्रह का होना भी ठीक नहीं रहता। नीच का गुरु भी ठीक फल नहीं देता, गुरु के साथ राहु का होना भी कहीं ना कहीं कष्टकारी बनता ही है। शुक्र मंगल की राशि में हो व मंगल शुक्र की राशि में हो तो उस जातक का चरित्र संदिग्ध रहता है। इस कारण दाम्पत्य जीवन में बाधा रहती है।

जानिए कहाँ खर्च होगा आपका धन

द्वितीय भाव धन व आर्थिक स्थिति को बताता है। इससे परिवार सुख व पैतृक संपत्ति की भी सूचना मिलती है। द्वितीय भाव में जो राशि होती है, उसका स्वामी द्वितीयेश कहलाता है। इसे धनेश भी कहते हैं।

1. धनेश लग्न में होने से परिवार से प्रेम रहता है, आर्थिक व्यवहार में पटुता हासिल होती है।
2. धनेश धन स्थान में हो तो परिवार का उत्कर्ष होता है व आर्थिक स्थिति हमेशा अच्छी रहती है।
3. धनेश तृतीय में हो तो भाई-बहनों की उन्नति व लेखन से आर्थिक लाभ का सूचक है।

4. धनेश चतुर्थ में हो तो माता-पिता से सतत सहयोग व लाभ मिलता है, चैन से जीवन बीतता है।
5. धनेश पंचम में हो तो कला से धनार्जन, संतान के लिए सतत खर्च करना पड़ता है।
6. धनेश षष्ठ में हो तो कमाया गया धन बीमारियों के लिए खर्च होता है, अतिविश्वास से धोखा होता है।
7. धनेश सप्तम में हो तो पत्नी/पति व घर के लिए ही सारा धन खर्च होता रहता है।
8. धनेश अष्टम में हो तो गलत तरीके से पैसा कमाने की वृत्ति रहती है व उससे आरोप-प्रत्यारोप लगते हैं।
9. धनेश नवम में हो तो आर्थिक योग उत्तम, व्यवसाय के लिए दूर की यात्रा के योग आते हैं।
10. धनेश दशम में होने पर नौकरी से लाभ, पैतृक संपत्ति भरपूर मिलती है।
11. धनेश ग्यारहवें स्थान में होने पर मित्र-संबंधियों से सतत सहयोग व लाभ मिलता है।
12. धनेश व्यय में हो तो बीमारी, कोर्ट-कचहरी में धन व्यय होता है। दान-धर्म में भी खर्च होता है।

लाल किताब का हॉरोस्कोप

लाल किताब को प्रचलित ज्योतिष ज्ञान से हटकर व्यावहारिक ज्ञान माना जाता है। लाल किताब के विशेषज्ञों अनुसार वैसे तो कुंडली की कोई आवश्यकता नहीं है, लेकिन वे फिर भी सुविधानुसार कुंडली देखकर समाधान कर देते हैं। समस्या से ही पता चलता है जातक कौन-से ग्रह से पीड़ित है, तब उक्त ग्रह के दोष को दूर कर दिया जाता है।

लाल किताब में दो प्रकार से हॉरोस्कोप बनाया जाता है। पहले प्रकार में हाथ की रेखा, पर्वत, भाव, राशि का निरीक्षण और निशानों को जाँच परखकर हॉरोस्कोप बनाया है और दूसरे प्रकार में प्रचलित ज्योतिष शास्त्र की पद्धति द्वारा बने हुए हॉरोस्कोप को परिवर्तित करके नया हॉरोस्कोप बनाया जाता है।

हालाँकि लाल किताब के जानकार हॉरोस्कोप बनाने से पूर्व जातक की वर्तमान परेशानियों तथा अतीत के घटनाक्रम को जानकर ही हॉरोस्कोप की विवेचना कर फलकथन करते हैं और उपाय बताते हैं। यहाँ प्रस्तुत है लाल किताब अनुसार हॉरोस्कोप बनाने की विधि।

(A) हाथ की रेखाओं के द्वारा :

पर्वत : हाथ पर अँगूठे और अँगुलियों की जड़ों में बने पर्वत जैसे अँगूठे के नीचे बना शुक्र और मंगल का पर्वत। पहली अँगुली के नीचे बना गुरु का पर्वत। बीच की अँगुली के नीचे बना शनि का पर्वत। अनामिका (रिंग फिंगर) के नीचे बना सूर्य पर्वत। सबसे छोटी अँगुली के नीचे बना बुध पर्वत। हाथ के अन्त में बना चंद्र पर्वत और खराब मंगल का पर्वत। जीवन रेखा की समाप्ति स्थान कलाई के ऊपर पर बना राहु पर्वत आदि यह सभी हाथ में ग्रहों की स्थिति बताते हैं।

राशियाँ :

1. राशियों के लिए तर्जनी का प्रथम पोर मेष, दूसरा वृषभ और तीसरा मिथुन राशि का होता है।

2. अनामिका का प्रथम पोर कर्क, दूसरा सिंह और तीसरा कन्या राशि का माना जाता है।

3. बीच की अँगुली का प्रथम पोर तुला, दूसरा वृश्चिक और तीसरा पोर धनु राशि का माना जाता है।

4. सबसे छोटी अँगुली का प्रथम पोर मकर, दूसरा कुम्भ और तीसरा मीन राशि का माना जाता है।

भाव या खाने : हथेली पर बारह भाव या खाने अलग-अलग प्रकार से होते हैं।

1. पहला खाना सूर्य पर्वत के पास।

2. दूसरा खाना गुरु पर्वत के पास।

3. तीसरा खाना अँगूठे और तर्जनी अँगुली की बीच वाली संधि में।

4. चौथा खाना सबसे छोटी अँगुली के सामने हथेली के आखिर में।

5. पाँचवाँ खाना बुध और चंद्र पर्वत के बीच में।

6. छठवाँ खाना हथेली के मध्य में।

7. सातवाँ खाना बुध पर्वत के नीचे।

8. आठवाँ खाना चंद्र पर्वत के नीचे।

9. नवाँ खाना शुक्र और चंद्र पर्वत की बीच में।

10. दसवाँ खाना शनि पर्वत के नीचे।

11. ग्यारहवाँ खाना खराब मंगल और हथेली के बीच में।

12. बारहवाँ खाना शुक्र पर्वत और हथेली के बीच में जीवन रेखा के नीचे होता है।

अन्य निशान :

1. हथेली में सूर्य का निशान सूर्य के समान दिखाई देता है।

2. चंद्र का निशान तारे की तरह नजर आता है।

3. शुभ मंगल का निशान चतुर्भुज के समान होता है।

4. अशुभ मंगल का निशान त्रिभुज के रूप में होता है।

5. बुध का निशान गोलाकार समान होता है।

6. गुरु का निशान किसी ध्वज की तरह होता है।

7. शुक्र का निशान समान्तर में बनी दो लहराती हुई रेखाओं-सा होता है।

8. शनि का निशान धनु के आकार का होता है।

9. राहु का निशान आड़ी-तिरछी रेखाओं से बना जाल-सा होता है।

10. केतु का निशान लम्बी रेखा के नीचे एक अर्धवृत्त-सा होता है।

(B) हॉरोस्कोप का परिवर्तन करना : ज्योतिषी पद्धति से बनी हॉरोस्कोप को लाल किताब के अनुसार बनाया

जाता है। जैसे 12 ही खानों में कोई-सी भी राशि हो सभी को हटाकर पहले खाने में मेष राशि को रखा जाता है और ग्रहों की स्थिति यथावत रहती है।

लाल किताब में कुंडली में स्थित राशियों को नहीं माना जाता है। केवल भावों को ही माना जाता है। प्रत्येक व्यक्ति की हॉरोस्कोप मेष लग्न की ही होती है। बस फर्क होता है तो सिर्फ ग्रहों का। फिर कारकों को और स्वामी ग्रहों को अपने अनुसार बनाकर लिख लेते हैं।

1. पहले भाव का स्वामी ग्रह मंगल होता है जिसका कारक ग्रह सूर्य है।
2. दूसरे भाव का स्वामी ग्रह शुक्र होता है जिसका कारक ग्रह गुरु है।
3. तीसरे भाव का स्वामी ग्रह बुध होता है जिसका कारक ग्रह मंगल है।
4. चौथे भाव का स्वामी ग्रह चंद्र होता है जिसका कारक ग्रह भी चंद्र ही है।
5. पाँचवें भाव का स्वामी ग्रह सूर्य होता है जिसका कारक ग्रह गुरु है।
6. छठे भाव का स्वामी ग्रह बुध होता है जिसका कारक ग्रह केतु है।
7. सातवें का स्वामी शुक्र होता है जिसका कारक ग्रह शुक्र और बुध दोनों हैं।
8. आठवें भाव का स्वामी ग्रह मंगल होता है जिसका कारक ग्रह शनि, मंगल और चंद्र हैं।
9. नौवें भाव का स्वामी ग्रह गुरु होता है जिसका कारक ग्रह भी गुरु होता है।
10. दसवें भाव का स्वामी ग्रह शनि होता है और कारक भी शनि है।
11. ग्यारहवें भाव का स्वामी शनि होता है, लेकिन कारक गुरु है।
12. बारहवें भाव का स्वामी गुरु होता है, लेकिन कारक राहु है।

इस प्रकार से लाल किताब अनुसार हॉरोस्कोप का निर्माण होता है, लेकिन फलादेश कथन से पहले ग्रहों की प्रकृति पर विचार करना बहुत जरूरी है। हालाँकि माना जाता है कि लाल किताब की विद्या बहुत ही जटिल और विरोधाभासिक है, इसीलिए इसके पूर्ण जानकार कम ही होते हैं। फलित ज्योतिष जानने वाले बहुत से ज्योतिषाचार्य लाल किताब के पूर्ण जानकार नहीं होकर भी उसके उपाय बताने लगे हैं।

तृतीय भाव पर ग्रहों का दृष्टि फल

तृतीय भाव संबंधी विविध फलों के बारे में हम पूर्व में चर्चा कर चुके हैं। प्रत्येक भाव पर उसके स्वामी की स्थिति के अलावा उस भाव पर विविध ग्रहों की दृष्टि फल से भी भाव का फल प्रभावित होता है।

1. तृतीय भाव पर सूर्य की दृष्टि बाहुबल व पराक्रम को बढ़ाती है। जातक को नेतृत्व का गुण देती है, जनता में लोकप्रिय बनाती है मगर बड़े भाई के सुख को कम करती है।
2. चंद्रमा की दृष्टि जातक को धार्मिक, शांत, शालीन प्रवृत्ति का बनाती है। जातक खूब प्रवास करते है, कन्या संतति की अधिकता होती है, बहनों से लाभ मिलता है और समाज में इन्हें अच्छे कार्यों के लिए पहचान भी मिलती है।
3. मंगल की तृतीय भाव पर दृष्टि छोटे भाई के सुख को कम करती है। मंगल निर्बल होने पर जीजा व भाभी को भी हानि कराता है (नवम में हो तो)। मगर प्रबल मंगल भाग्य व पराक्रम की वृद्धि करता है।

4. बुध की दृष्टि जातक को भाई-बहनों का पूर्ण सुख देती है, जातक भाग्यवान होता है। देश-समाज के कार्यों में खूब रूचि लेता है और अच्छी संगति करता है। धार्मिक व व्यावसायिक यात्रा के अवसर मिलते है।

5. गुरु की दृष्टि भाई-बहनों की प्रचुरता व उनसे सुख को दर्शाती है। भाग्य का साथ मिलता है, प्रवास योग बनते है। व्यक्ति सदाचरण वाला होता है और समाज में मान्य रहता है।

6. शुक्र की दृष्टि होने पर भाई-बहन, साला-साली की बहुतता रहती है व उनसे प्रेम बना रहता है। धन के मामले में भाग्यशाली बनाती है। जल्दी भाग्योदय होता है, जातक व्यवहारकुशल होता है।

7. शनि की दृष्टि जातक को साहसी व पराक्रमी तो बनाती है मगर भाग्य हानि करती है, जीवन में बहुत संघर्ष होता है। भाई-बहनों से पटती नहीं है। गलत संगति से नुकसान भी होता है। प्रवास योग बाधित हो जाते हैं।

8. तृतीय भाव पर राहु की दृष्टि जातक को बलशाली, पराक्रमी व पुरुषार्थी बनाती है। मगर भाई-बहनों के स्वास्थ्य व भाग्य को हानि दर्शाती है।

9. तृतीय भाव पर केतु की दृष्टि जातक को पराक्रमी व जनमान्य बनाती है। शत्रुओं पर सदा विजय मिलती है, समाज कल्याण के कार्यों में रुचि व घुमक्कड़ प्रवृत्ति भी होती है। संतान के स्वास्थ्य को कष्ट हो सकता है।